P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-9* May- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

श्री अग्रभागवत में निहित शैक्षिक, सामाजिक और नैतिक पक्षों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

The current perspective of educational, social and ethical aspects contained in Shri Agargavat

Paper Submission: 10/05/2020, Date of Acceptance: 26/05/2020, Date of Publication: 30/05/2020

अशोक कुमार सिडाना
आचार्य,
श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय,
सी.टी.ई. केशव विद्यापीठ,
जामडोली, जयपुर,
राजस्थान, भारत

सरिता शर्मा
शोधार्थी,
शिक्षा विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

भौतिकतावाद की अंधी दौड़ में आज मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। असामाजिक तत्वों और मानसिक रूप में कुंठित लोगों के कारण तेजी से नैतिक, सामाजिक पतन हो रहा है जिससे समाज में विभिन्न समस्याऐं और धारणाऐं जन्म ले रही है। इन समस्याओं का समाधान भारतीय संस्कृति और शिक्षा के माध्यम से किया जा सकता है। श्री अग्रभागवत में निहित शैक्षिक, सामाजिक और नैतिक पक्षों का अध्ययन कर मूल्यों की पुनः स्थापना की जा सकती है। श्री अग्रभागवत में श्री अग्रसेन महाराज के आदर्श जीवन चरित्र का वर्णन किया गया है जो पठन–पाठन के योग्य है। आज संस्कारहीन मानव समाज में अदूर दृष्टि, स्वार्थलिप्सा, अन्धानुकरण आदि दुर्गुणों के प्रादुर्भाव हो जाने से, व्यापक विचार करने की सामाजिक क्षमता क्षीण हो गई हैं। अतः श्री अग्रसेन महाराज के इस जीवन चरित्र का स्वाध्याय ही एकमेव उत्तम उपाय है और यही समय की नितांत आवश्यकता भी है।

Human values are being eroded today in the blind race of materialism. Due to anti-social elements and mentally frustrated people, there is fast moral, social degradation due to which various problems and perceptions are taking birth in the society. These problems can be solved through Indian culture and education. Values can be re-established by studying the educational, social and moral aspects contained in Shri Agargavat. Shri Agar Bhagwat describes the ideal life character of Shri Agrasen Maharaj, who is worthy of reading. Today, due to the emergence of bad eyesight, selfishlipsa, blindness etc. in the riteless human society, the social ability to think extensively has deteriorated. Therefore, self-study of this life character of Shri Agrasen Maharaj is the only best solution and this is also the absolute need of the hour.

मुख्य शब्द : श्री अग्रभागवत, शैक्षिक पक्ष, सामाजिक पक्ष, नैतिक पक्ष।
Shri Agargavat, Educational Aspect, Social Aspect, Moral aspect.

प्रस्तावना

वर्तमान भारतीय समाज में निरन्तर देश प्रेम, सामाजिक समानता, राष्ट्रीय एकता, नैतिक आदर्श जैसे मानवीय मूल्यों का निरन्तर हनन हो रहा है। मूल्यों की आवश्यकता यों तो सदैव से ही रही है, लेकिन आज की संघर्षमयी, स्वार्थमयी दुनिया में इनके सहारे ही कल्याण पथ पर बढ़ा जा सकता है। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि हम वैज्ञानिक एवं तकनीकी उन्नति के साथ–साथ अपने परम्परागत अनुभवों के आधार पर जाँची परखी जीवन मूल्य धारा से भी जुड़े रहे और शैक्षिक, सामाजिक स्तर में सुधार के साथ–साथ नैतिक मूल्यों एवं चारित्रिक मूल्यों का संवर्धन कर सके।

श्री अग्रभागवत में श्री अग्रेसन महाराज के कर्मो की गाथा के प्रत्येक प्रसंग, हमें मानव जीवन के उच्चतम आदर्शों का साक्षात्कार करवाते हैं। उन मानवीय पथ पर, चलने को अभिप्रेरित करते है। अतः अग्रभागवत में निहित शैक्षिक, सामाजिक और नैतिक पक्षों का अध्ययन कर आज की शिक्षा व्यवस्था में इस प्रकार समायोजन किया जाए और भावी शिक्षार्थियों को इनकी शिक्षा दी जाए, जिससे पुनः भारतीय समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना हो।

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य चरित्र निर्माण है। चरित्र के कारण ही मनुष्य में मनुष्यत्व विद्यमान रहता है। चरित्र से तात्पर्य उन गुणों से है जिनके द्वारा मनुष्य

अपना तथा समाज का हित करता है। यह गुण प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, सत्य, त्याग, दया, सद्भावना, क्षमा, सहनशीलता और न्यायप्रियता है। ये सभी गुण श्री अग्रसेन महाराज के कार्यों तथा व्यक्तित्व में झलकते है। श्री अग्रसेन महाराज ने अपने चरित्र के आधार पर अपने लक्ष्यों को प्राप्त किया और अपने जीवन की पूर्णता की ओर अग्रसर हुए।

वर्तमान में शिक्षा का स्वरूप क्या हो? शिक्षा कैसे और किस प्रकार दी जाए? आदि प्रश्न चिन्तन के लिए बाध्य करते है। शिक्षा का उद्देश्य सर्वांगीण विकास, आत्मानुशाषित नागरिक बनाने के स्थान पर अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठाना हो गया है। मनुष्य अपने आपको सुखी रखना चाहता है और इस कारण वह किसी भी प्रकार का अनैतिक आचरण अपनाने में संकोच का अनुभव नहीं करता। क्या यही आज की शिक्षा का उद्देश्य है? नहीं। यदि हम बालक को प्रारम्भ से ही वह व्यवहार करना सिखाए जो मूल्यों की कसौटी पर उचित है, तो वह जब भी कोई व्यवहार करेगा तो एक पल के लिए यह विचार करेगा कि मैं जो व्यवहार करने जा रहा हूँ, क्या वह मूल्य की कसौटी पर उचित है। ऐसा करने का प्रभाव यह होगा कि व्यक्ति मूल्य परख व्यवहार करके अपने आचरण को सही दिशा प्रदान करेगा। अतः इन मूल्य परख व्यवहार हेतु आवश्यक है कि शिक्षा के शाश्वत मूल्यों व तथ्यों की खोज की जाए, उन्हें स्पष्ट व परिभाषित किया जाए। इन तथ्यों की खोज हेतु हमें प्राचीन शैक्षिक विचारधाराओं, महापुरूषों, शिक्षाविद्ो आदि की शरण में जाना ही पड़ेगा और उनके दिखाए मार्गों पर चलकर सुखद व समृद्ध राष्ट्र का निर्माण करना होगा। इए उच्चतर उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए श्री अग्रभागवत में निहित शैक्षिक, सामाजिक और नैतिक मूल्यों के विकास पर बल देना अतिआवश्यक हो गया।

श्री अग्रभागवत ग्रन्थ में श्रद्धा, उद्योशशीलता, निर्भयता, सात्विकता, ज्ञान, दान, यज्ञ, तप, दम, स्वाध्याय, अहिंसा, शांति, दया आदि दैवी गुण–सम्पदा युक्त जीवन मूल्यों का वर्णन किया गया है। श्री अग्रसेन महाराज दानशील, क्षमाशील, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्य का अनुसरण करने वाले श्रेष्ठ मानव थे। उन्होंने 'एक ईंट – एक रूपया' नियम बनाकर समाजवाद का अनुठा उदाहरण प्रस्तुत किया, जो सर्वोत्थान की भावना से लागू किया गया। इस समता के सिद्धान्त से बन्धुत्व की भावना, समाज, राष्ट्र और मानवता का कल्याण होगा। श्री अग्रभागवत में निहित मूल्यों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना होना चाहिए जो मानव में धर्म (तपशक्ति), अर्थ (समृद्धि) और नय (उत्तम नीति) का विकास करें।

समस्या का उद्भव

विश्व में सिर्फ मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसमें प्रज्ञा रूपी विशेषता पाई जाती है। इस प्रज्ञा के कारण मानव चिन्तन और मनन करता है। विचारशीलता के गुण होने की वजह से मानव कार्य व अकार्य में भेद कर सकता है। कर्म का आधार जीवन के मूल्यों की कसौटी पर खरा उतरना होता है। प्रज्ञा के कारण ही मानव आचार और विचारों में जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रेरित होता है और चिन्तन करता है कि वास्तव में वह कौन है? जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है? जीवन में समस्याओं का कारणा एवं निदान क्या है? हमें किस प्रकार के जीवन मूल्यों को अपनाना चाहिए? सुख का आधार क्या है? ऐसी अनेक मानवीय जिज्ञासाओं का समाधान तथा समस्याओं का निदान हमें श्री अग्रभागवत ग्रन्थ में मिल सकता है। श्री अग्रभागवत में बताए मार्ग पर चलकर न केवल लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है बल्कि समाज व राष्ट्र को भी उन्नत बनाया जा सकता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणि है। वर्तमान समय में मनुष्य लुप्त होते प्राचीन जीवन मूल्यों और आडम्बर युक्त आधुनिक जीवन मूल्यों के मध्य तड़प रहा है। वैश्विक औद्योगिक विकास के साथ समाज को सामाजिक, नैतिक एवं शैक्षिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में आज शैक्षिक, नैतिक, सामाजिक मूल्यों का पतन होता जा रहा है। इस मूल्यों के पतन के क्या कारण है? शिक्षा दर्शन और इन मूल्यों में क्या सम्बन्ध है? अग्रभागवत में निहित मूल्य, शिक्षा प्रणाली में किस प्रकार सुधार करने में सहायक है? तथा अग्रभागवत की शिक्षाओं द्वारा इन मूल्यों को ओर कितना प्रभावी बनाया जा सकता है? आदि प्रश्नों के उत्तर जानने की जिज्ञासा के कारण शोधकर्त्री के मन–मस्तिष्क में उपर्युक्त शोध समस्या का उद्भव हुआ।

समस्या का औचित्य

आज व्यक्ति की आकांक्षाओं, आशाओं का स्तर बहुत बढ़ गया है। उसने अपना लक्ष्य रोटी, कपड़ा और भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति ही बना लिया है और इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु वह किसी भी असामाजिक और अनैतिक कार्य करने से परहेज नहीं रखता है। व्यक्तियों में आपस में समरसता, निष्ठा, विश्वास, दया, प्रेम, सहानुभूति का अभाव हो गया है। ऐसे विडम्बना पूर्ण दयनीय हालात से बाहर निकलने के लिए महापुरूषों के विचारों और आदर्शो को व्यवहार में लाने की आवश्यकता है।

इस हेतु श्री अग्रभागवत में निहित श्री अग्रसेन महाराज के जीवन चरित्र का अध्ययन करना उत्तम उपाय है। आज युवा वर्ग, शिक्षा जगत से भटक गया है, उनके लिए श्री अग्रभागवत में निहित विचार और मूल्य सही दिशा निर्देश व मार्ग बताने में अति महत्त्वपूर्ण है।

शोधकर्त्री को लगता है कि श्री अग्रभागवत में निहित मूल्यों, विचारों पर शोध नहीं हो पाया है। श्री अग्रभागवत में निहित विभिन्न पक्षों पर शोध कर समाज पर इसकी उपादेयता ज्ञात की जाए हो श्री अग्रभागवत में निहित जीवन मूल्यों की उपादेयता निश्चित ही औचित्यपूर्ण हैं

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है –

1. श्री अग्रभागवत में निहित शैक्षिक, सामाजिक और नैतिक पक्षों का अध्ययन।
2. श्री अग्रभागवत में निहित विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

3. श्री अग्रभागवत में निहित नैतिक और सामाजिक विचारों की उपादेयता का अध्ययन करना।
4. श्री अग्रभागवत में निहित विभिन्न जीवन मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपायदेयता का अध्ययन करना।

समस्या कथन

''श्री अग्रभागवत में निहित शैक्षिक, सामाजिक एवं नैतिक पक्षों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन''।

तकनीकी शब्दावली :

(अ) **श्री अग्रभागवत** :– श्री अग्रभागवत कथा की उत्पत्ति वेदों के रचियता महर्षि वेदव्यास जी के प्रधान शिष्य एवं सामवेद के दृष्टा महर्षि जैमिनी जी के द्वारा रचित एवं राजा जनमजेय को राज सूय यज्ञ रोकने हेतु ज्ञान प्रदान करने हेतु सुझाये गए अग्रउपख्यानम ग्रन्थ से हुई है।

(ब) **शैक्षिक पक्ष** :– शिक्षा का अर्थ है पोषण या विकसित करना। अतः ''वह प्रक्रिया जो बालक का विकास और पोषण करती है'' शिक्षा कहलाती है। शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न तथ्यों द्वारा बालक का विकास होता है।

(स) **सामाजिक पक्ष** :– सामाजिक शब्द का अर्थ है समाज से सम्बन्ध रखने वाला अर्थात् समाज में रहने वाले विभिन्न व्यक्तियों के मध्य सम्बन्ध। मनुष्य समूह में रहता है, इसलिए उसे आचार संहिता का पालन करना पड़ता है ताकि वह शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सके।

(द) **नैतिक पक्ष** :– नैतिक अर्थात ''नीति सम्बन्धी''। अर्थात नीति के अनुसार होने वाले युक्ति आचरण या व्यवहार से सम्बन्ध रखने वाला ''नैतिक'' कहलाता है। नैतिक पक्ष में उन सिद्धान्तों की संहिता आती है, जो उत्तम जीवन जीने के लिए आवश्यक है।

(य) **परिप्रेक्ष्य** :– परिप्रेक्ष्य शब्द का अर्थ है ''देखने अथवा सोचने की विशेष दृष्टि''। यह शब्द किसी वस्तु, पदार्थ, मत, मूल्य आदि को देखने के दृष्टिकोण से सम्बन्धित है।

साहित्यावलोकन

1. **जैन, अजीत कुमार (2019)** : पीएच.डी., शिक्षा, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, ''जैन दर्शन में निहित शैक्षिक, नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का अध्ययन''।

   निष्कर्ष – जैन दर्शन के अध्ययन से शैक्षिक, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों द्वारा मनुष्य को यथार्थता का बोध होता है। क्योंकि इन मूल्यों की शिक्षा द्वारा मनुष्य को सदमार्ग की प्रेरणा प्रदान कर जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

2. **चावड़ा, हसमुख एम. (2018)** : पीएच.डी. शिक्षा, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, गुजरात, ''व्यक्तित्व, नैतिक मूल्य एवं शारीरिक, मानसिक तनाव पर योग का प्रभाव''।

   निष्कर्ष – (1) कार्य के आधार पर ईमानदारी नैतिक मूल्य में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

   (2) आयु के आधार पर ईमानदारी नैतिक मूल्य में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

3. **पारीक, मौसम, (2018)** : पीएच.डी. जैन विश्व भारती संस्थान लाडनूं, नागौर, ''तेरापंथ के चयनित आचार्यो के शैक्षिक विचारों के वर्तमान की शिक्षा की समस्याओं के समाधान को अध्ययन''।

   निष्कर्ष – वर्तमान समय में शिक्षा में मूल्यों के ह्रास से उत्पन्न स्थिति को दूर करने के लिए तेरापंथ के आचार्यों के शैक्षिक विचारों को अपनाकर दूर किया जा सकता है। आचार्यों ने जीवन मूल्यों द्वारा समाज में शांति, अहिंसा, समानता की अनुशंसा की है।

4. **जैन, हेमलता, (2017)** : पीएच.डी., शिक्षा राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, ''जैन दर्शन में शांति शिक्षा – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन''।

   निष्कर्ष – जैन दर्शन में अन्तर्निहित शान्ति की अवधारणा के विषय में निष्कर्ष रूप में यह ज्ञात होता है कि जैन दर्शन में प्रतिपादित प्रमुख सिद्धान्त जैसे अहिंसा, अस्तेय, अनेकान्तवाद, दस लक्षण धर्म, स्यादवाद आदि शान्ति की स्थापना के लिए बहुत महत्वपूमर्ण है। इन्हें वर्तमान शिक्षा पद्धति में समाहित किया जाना चाहिए।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य ''शिक्षा की दार्शनिक शोध विधि'' द्वारा किया गया है।

अध्ययन के स्त्रोत

अध्ययन में सूचनाएं प्राप्त करने के लिए प्राथमिक स्त्रोत के रूप में श्री अग्रभागवत ग्रन्थ तथा गौण स्त्रोत के रूप में पुस्तकें, जर्नल्स, प्रकाशित और अप्रकाशित अध्ययन सामग्री का उपयोग किया गया है।

शोध की परिसीमाऐं

प्रस्तुत शोध श्री अग्रभागवत में निहित शैक्षिक, सामाजिक एवं नैतिक पक्षों के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन तक सीमित है।

शोध निष्कर्ष

श्री अग्रभागवत के अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए है –

1) श्री अग्रभागवत एक प्राचीन तथा साहित्यिक ग्रन्थ है। यह मूल्यों की दृष्टि से अति समृद्ध व व्यापक है। इसका क्षेत्र अत्यन्त विशाल है।
2) श्री अग्रभागवत में शैक्षिक, सामाजिक और नैतिक पक्षों की विवेचना बड़ी ही स्पष्टता एवं गहनता से की गई है।
3) श्री अग्रभागवत में प्रतिपादित नियम, सिद्धान्त और उपदेश से वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति को अवगत करवाना चाहिए जिससे समाज और शैक्षिक व्यवस्था में धीरे–धीरे लुप्त होते जा रहे शैक्षिक, नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों की पुनर्स्थापना की जा सके।
4) राष्ट्र और समाज की उन्नति, खुशहाली एवं विकास के लिए श्री अग्रभागवत में निहित शैक्षिक, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को शिक्षण व्यवस्था के सभी स्तरों (प्राथमिक, सैकण्डरी, हायर सैकण्डरी एवं

विश्वविद्यालय) पर पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाये।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध समस्या वर्तमान में शैक्षिक, सामाजिक, नैतिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक आदि क्षेत्रों में मानव के गिरते शैक्षिक, नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के समाधान व रोकथाम के लिए सर्वाधिक उपर्युक्त है। क्योंकि श्री अग्रभागवत में शैक्षिक, नैतिक, और सामाजिक मूल्यों का विस्तृत, विशुद्ध, व्यापक अतुलनीय, अकल्पनीय वर्णन किया गया है। प्रस्तुत शोध समस्या के शैक्षिक निहितार्थ निम्न है –

1) श्री अग्रभागवत के अध्ययन से सामाजिक व शैक्षिक व्यवस्था में गिरते शैक्षिक, सामाजिक, नैतिक मूल्यों की रोकथाम व इनकी पुनर्स्थापना की जा सकती है।
2) समाज में शांति, अहिंसा, समानता जैसे जीवन मूल्यों द्वारा पारस्परिक समन्वय, सामंजस्य, सौहार्द, शांति की स्थापना की जा सकती है।
3) राष्ट्रों में आपसी संघर्ष, युद्ध आदि समस्याओं का निराकरण किया जा सकता है।
4) ''जियो और जीने दो'' सिद्धान्त द्वारा वसुधैव–कुटुम्बकम की विचारधारा को सुदृढ़ किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्रवाल, जे.सी. (2001) : शिक्षा अनुसंधान, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।*
2. *बेदिल, श्री रामगोपाल (2015) : श्री अग्रभागवत, अग्रविश्व ट्रस्ट, महाराष्ट्र।*
3. *गोयल, चाँद बिहारी (2005) : महाराजा श्री अग्रसेन : जीवन एवं दर्शन : विचार संगोष्ठी 5 अक्टूबर, 2005, जयपुर, राजस्थान।*
4. *तुरकॉसवाला, गिरिजा शंकर (2016) : संक्षिप्त श्री अग्रभागवत कथा ed. 2nd, श्री अग्रसेन महासभा ट्रस्ट, जयपुर, राजस्थान।*
5. *अग्रवाल रामलाल (2004) : अग्रकाव्य, अग्रणी शोध एवं प्रकाशन केन्द्र, जयपुर (राज.)।*
6. *http:// allindiaagarwol.com/history.*